OFFICE, PRINCIPAL GOVERNMENT TULSI COLLEGE, ANUPPUR
Affiliated to Awadhesh Pratap Singh University Rewa (MP)
Registered Under Section 2 (F) & 12 (B) of UGC Act

E-mail: hegtdcano@mp.gov.in ☎9893076404

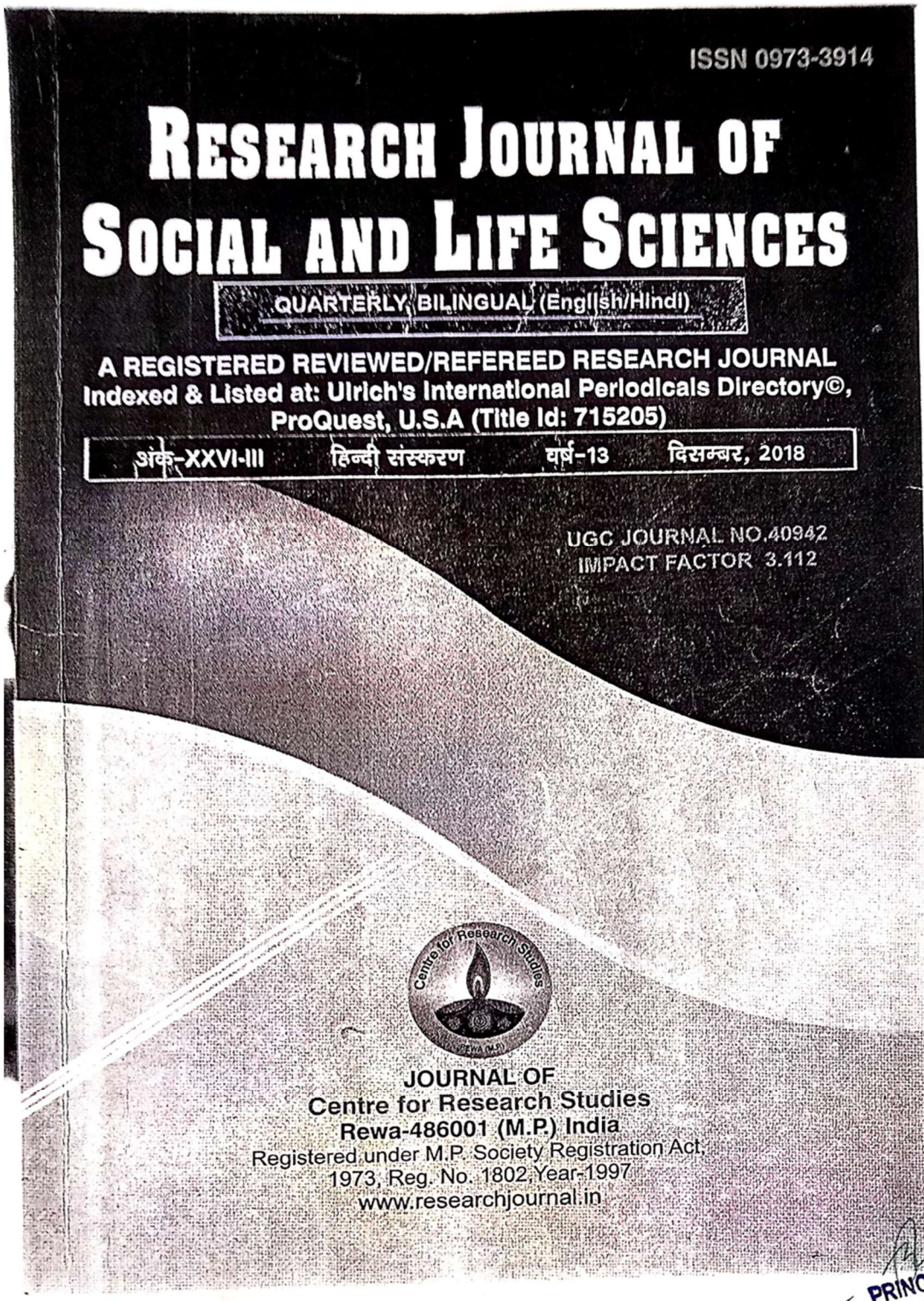

PRINCIPAL
Govt. Tulsi College Anuppur
At. Anuppur (M.P.)

Changes in traditional industries and tribal life – A sociological study

UGC Journal No. 40942,
Impact Factor 3.112, ISSN 0973-3914
Vol.- XXVI, Hindi-III, Year-13, Dec., 2018

परम्परागत उद्योग एवं जनजातीय जीवन में परिवर्तनः एक समाज शास्त्रीय अध्ययन

(मध्यप्रदेश राज्य के अनूपपुर जिले के गोड़ एवं वैगा जनजाति के संदर्भ में)

• ध्रुव कुमार दीक्षित
•• तरन्नुम सरवत

सारांश– परिवर्तन प्रकृति का नियम है समाज प्रकृति का एक अंग है। इस कारण समाज में परिवर्तन का होना एक स्वभाविक प्रक्रिया है। सामाजिक जीवन में उसके स्वरूप, संरचना, व्यवस्था, प्रथा, रीति–रिवाज, मूल्य आदर्श सभी में परिवर्तन की प्रक्रिया निरंतर जारी है। ऐसा कोई भी समाज नहीं है जिसमें परिवर्तन की प्रक्रिया न हो। प्रत्येक समाज में सामाजिक परिवर्तन की गति एक समान नहीं होती। किसी समाज में परिवर्तन काफी तेज होता है और किसी समाज में काफी धीमी गति से। सामाजिक जीवन के एक पक्ष में होने वाले परिवर्तन उनके अन्य पक्षों को भी परिवर्तित कर देता है। सामाजिक परिवर्तन के लिये अनेक कारक उत्तरदायी होते हैं। मुख्य रूप से प्रौद्योगिकी, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, धार्मिक कारक महत्वपूर्ण है। सामाजिक परिवर्तन सामाजिक कारक के सभी क्षेत्रों में देखा जा सकता है। जनजातियों की आर्थिक व्यवस्था को उनके सांस्कृतिक–पारिस्थितिकी (कल्चरल इकोलॉजी) परिवेश के अन्तर्गत समझा जा सकता है। इनका आर्थिक जीवन भौतिक आवश्यकताओं से संबंधित है, जो उनकी संस्कृति को समझने में सहायक होता है।

मुख्य शब्द– जनजाति समाज, सामाजिक परिवर्तन, परंपरागत उद्योग।

अवधारणा– जनजाति अथवा आदिवासी ऐसे मानव समूह हैं जिन्होनें सभ्यता के कुछ तत्वों को ग्रहण करने के पश्चात् भी अपनी मौलिक सांस्कृतिक विशेषताओं को नष्ट नहीं होने दिया है। मध्यप्रदेश में जनजातियों की सबसे अधिक जनसंख्या और सर्वाधिक प्रकार है। यहाँ की कुल जनसंख्या का लगभग पाँचवा हिस्सा जनजातियों का है।

सरलता, सादगी, स्वाभाविकता, स्वाभिमान, स्वावलम्बन, समर्पण, सहानुभूति, सहिष्णुता, भाईचारा, आत्मसंतोष, एकांतप्रियता, प्राकृतिक प्रेम, कर्मठता आदि गुणों से ओतप्रोत तथा अपनी विशिष्ट सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक विशेषताओं के लिये प्रसिद्ध जनजाति समुदाय प्रकृति की अनोखी एवं अनुपम कृति है।

जनजातीय लोग गॉव के नजदीक टोली बनाकर रहते है। इनका मुख्य पेशा कृषि है परन्तु इसके अतिरिक्त पशुपालन भी करते हैं। गोड़ का रंग काला तथा मजबूत

• सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्र, केसरवानी महाविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)
•• शोधार्थी, समाजशास्त्र, शासकीय महाविद्यालय अनूपपुर (म.प्र.)

PRINCIPAL
Govt. Tulsi College Anuppur
Distt. Anuppur (M.P.)

E-mail: hegtdcano@mp.gov.in 9893076404

अर्थात 24 प्रतिशत थी तथा सामान्य सम्बन्ध वाले परिवारों की संख्या 10 अर्थात 20 प्रतिशत थी तनावपूर्ण परिवार वालों की संख्या 28 अर्थात 56 प्रतिशत थी तनावपूर्ण व्यवहार वाले परिवार जो वर्तमान में घटकर 21 प्रतिशत ही बचे है।

सुझाव–

1. गोड़ एवं बैगा जनजाति विकास के लिये आधुनिकतम शिक्षा की व्यवस्था की जाये तथा उन्हें टेक्निकल कोर्स कराये जाये साथ ही उनकी पढ़ाई के लिये कम ब्याज पद ऋण मुहैया कराया जाय।
2. उन व्यक्तियों के खिलाफ कड़ी से कड़ी कानूनी कार्यवाही किया जाय तो भोले-भोले अशिक्षित जनजाति के बच्चे एवं महिलाओं तथा पुरूषो का शारीरिक एवं आर्थिक रूप में शोषण करते हैं।
3. जनजातीय क्षेत्रों में पुलिस चौकी की व्यवस्था की जाये तथा उन पर हो रहे अत्याचारों की कार्यवाही सही समय पर की जाये।
4. इनके गावों के आस-पास स्वास्थ्य चिकित्सा केन्द्र खोला जाय तथा उनके स्वास्थ्य सुधार हेतु विशेष कार्यक्रम चलाया जाय एवं इनके क्षेत्र में स्वास्थ्य सुधार हेतु शिविर लगाये जाये।
5. युवागृह आदिवासी युवकों और युवतियों के लिये शिक्षा के साधन होते हैं। अतः युवागृहों को नष्ट होने से बचाया जाना चाहिए तथा उनका पुनर्स्थान किया जाये।
6. स्वास्थ्य सम्बधी सुझाव आदिवासी युवकों और युवतियों को कम्पाउंडर और दाई का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।
7. जनजातियों में जागरूकता का विकास किया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. नायडू पी.आर. (2008), भारत के आदिवासी विकास की समस्याऐं, राधा पब्लिकेशन्स नई दिल्ली पृ. 09
2. शर्मा, ब्रह्मदेव, 1994, आदिवासी विकास एक सैद्धान्तिक विवेचन, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल
3. तिवारी शिवकुमार एवं शर्मा, श्री कमल, 1994, मध्यप्रदेश की जनजातियां समाज एवं व्यवस्था मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल।
4. उपाध्याय, विजयशंकर एवं शर्मा, विजय प्रकाश, 1993, ''भारत की जनजातीय सांस्कृति'' मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ आकदमी भोपाल।
5. सिद्दीकी शाहेदा, रावत मनोज (2014) गोड़ एवं बैगा जनजाति की महिलाओं में वैवाहिक परिवर्तन 'रिसर्च जनरल ऑफ सोशल एण्ड लाइफ साइसेंज, गायत्री पब्लिकेशन रीवा पृ. 154-156
6. शर्मा श्रीनाथ (2010) 'जनजाति समाजशास्त्र' म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल पृ. 65।
7. तिवारी शिवकुमार व शर्मा, कमल(1994)'मध्यप्रदेश की जनजातियों एवं समाज व्यवस्था' पृ. 24।
8. सिंह वीरेन्द्र (2007) 'मध्यप्रदेश सामान्य ज्ञान' अरिहंत पब्लिकेशन्स मेरठ पृ. 71
9. मीणा लक्ष्मीनारायण (1991)'मीणा जनजाति-एक परिचय' मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल पृ.16
10. विष्ट भगवान सिंह (1992) 'उत्तराखण्ड की भोटिया जनजाति' विवेक प्रकाशन दिल्ली,

PRINCIPAL
Govt. Tulsi College Anuppur
Distt. Anuppur (M.P.)